विषय : यहाँ एक नदी बहती थी

आज भी बहते हैं...

भगवान का एक सुंदर सपना है ये दुनिया,
सदियों के साथ, वह भी तब्दील हो गई नया,
पर, सालों से पहले यहाँ एक नदी बहती थी,
प्यार और संस्कार की पानी से वह भरी थी...।

उसकी हर बूँद में था, मानवीकता का एहसास,
सुकून से ले रहे थे मानव अपने हर साँस,
पहले, प्यार भरा मन था, सबसे बड़ा दौलत,
लेकिन खुदगर्ज़ बन गई है, आज का असलियत...।

इंसानियत से भरा नदी, अब बन गई सूखी,
सिर्फ उसकी आँसुओं के निशान बन गई बाकी।
सुनने भूल गई हम, इस नदी की पुकार,
उसकी घाव पार, अब हर दुवा है बेकार...।

नई पीढ़ी को न है इस नदी की नज़ारा,
सिर्फ चाहिए उन्हें, अंतरजाल की सहारा..।
मन में अब न है, 'दया' नामक एक जसबात,
जैसे चाँदनी के बिना, आ जाता काला रात...।

धरती न है, इस नदी की पानी से भरा,
प्यार के बिना रेगिस्तान बन गई धरा...।
मानव मिला है, खुदा से मिला अनमोल खज़ाना,
पर कोशिश करते हैं, मानव, एक दूसरे को फ़ज़ाना...।

खुशियों की संसार में पहुँच जाती थी वह नदी,
बदलाव की दुनिया में, अब बन गई वह कैदी...।
चढ़ रहा है मानव आधुनिकता का पहाड़
भूल गई कि नदी के अंदर से रहा है एक बाढ़...!

एक परिवार थे हम, अब एक दूसरे के खिलाफ.
भगवान भी नहीं किया, इस पाप को माँफ
इसीलिए, गायब हुई नदी वापस आया
हमें सिखाने कि, सब है अपना, न है पराया...।

अभला था, मानव के बीच जातियों के दिवारें,
धर्म के नाम पर लड़ रहे थे हज़ारें....।
इसी नदी ने उन रिश्तों को वापस जोड़ा,
बहाव में शायद हमारे कुछ सपनों को तोड़ा...।

अब सब सुना, इस बाढ़ की आवाज़,
न होना चाहिए, हमे भगवान पर नाराज़,
हमे मानवीकता सिखाने के लिए थे या ज़रूरी,
बाढ़ है, इस प्यार भरा नदी की मज़बूरी...।

वापस आगया है अब 'भक्तों' की आसमान,
अब न है यहाँ कोई मुसलमान,
न रहते है हिंदु, न रहते है ईशाई,
हमारे साथ सिर्फ है, भक्तों की परछाई....।

जिन नदियों को हम मानव ने मारा,
शान बन गई तो, क्या?, ज़रूर चमकेगा सितारा
वह उम्मीद की पौधों को बढ़ाने आया है,
नई फूलों की बरसात करने आया है

उस रेगिस्तान में आ गया है बारिश की दुआ,
मुशकिल से लड़ना पड़ा, तो क्या हुआ?
यहाँ, फिर वापस आएँगा हरियाली,
सूरज की सिंदूर चमकेंगा फिर लाली..।

सालों से पहले, यहाँ एक नदी बहती थी,
और वह प्यार भरा नदी, कल भी बहेंगा....।